MT

Seat No. | | | | | | | |

2018 1100

MT - HINDI (COMPOSITE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - I - PAPER - VI

Time : 2 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 50**

विभाग 1 - गद्य

उ. 1 (क) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) (i) **उचित जोड़ियाँ मिलाइए।** **2**

(i - ख), (ii - क), (iii - घ), (iv - ग)

(2) (i) **वचन बदलिए।** **1**

(I) शक्ति - शक्तियाँ (II) मोमबत्ती - मोमबत्तियाँ

(ii) **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।** **1**

(I) साधना (II) सभ्यता

(3) मन के अंत:करण की सुंदर प्रस्तुति कला होती है। कला में मानसिक व शारीरिक कौशलों का प्रयोग होता है। कला का अर्थ है - रचना करना। चित्रकला, संगीत, काव्य, नृत्य, स्थापत्यकला, रंगमंच आदि कला के विविध रूप हैं। कला के द्‌वारा मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। कला मानव, प्राणियों में अमृत भर देती हैं। फिर वह कला संगीत कला हो या चित्रकला। वह अभिव्यक्ति का कुशल साधन बनकर मनुष्य के हृदय पर सकारात्मक प्रभाव निर्माण करती है। कला के द्‌वारा मनुष्य अपनी संवेदनाएँ व अभिरुचि को दिशा देने की अद्‌भुत क्षमता रखता है। कला मानवीय मन को सम्मोहित करती है। कला की अभिव्यक्ति जितनी कुशल होती है। उतनी वह मानव मन पर अपनी छाप छोड़ने में सक्षम होती है। ताजमहल देखने के लिए प्रतिवर्ष लाखों लोग आते हैं। लोग चार मिनार की सैर करते हैं। ये सारी कला ही तो हैं जो अपने अभिव्यक्ति के सशक्त पहिए पर खड़ी हैं। अत: कहा जाता है : अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति कला होती है। वह अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है। **2**

उ. 1 (ख) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) (i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **2**

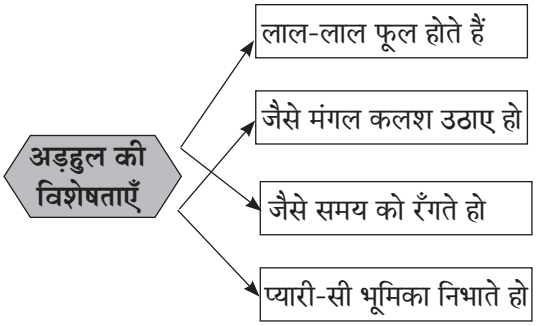

(2) (i) **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।** **1**

(I) संवाद (II) सदाबहार

(ii) **निम्नलिखित तत्सम शब्द का तद्‌भव रूप लिखिए।** **1**

(I) पुष्प - फूल (II) मास - महीना

(3) जी हाँ, मैं इस कथन से सहमत हूँ। प्रकृति मानव जीवन की सहचरी है। प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना करना निरर्थक है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को प्रकृति से अपनत्व रखना चाहिए। जो व्यक्ति प्रकृति से अपनत्व रखता है उसमें उच्च मानवीय गुणों का संचार होता है। अंग्रेजी साहित्य के महान कवि विलियम वर्डस्वर्थ को कविता लिखने की प्रेरणा प्रकृति ने ही प्रदान की थी। अत: उन्होंने प्रकृति को ईश्वर का रूप माना है। प्रकृति मानव मन को नित्य प्रेरित करती है। पुराने जमाने में ऋषि-मुनि प्रकृति की गोद में बैठकर ही तपस्या करते थे। वेदों का निर्माण भी प्रकृति के सानिध्य में ही हुआ है। प्रकृति से अपनत्व रखने वाला व्यक्ति जीवन में ऊँचा उठता है। उसका हृदय संवेदनाओं एवं असीम करुणा से भरा रहता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों के जीवन को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। अत: प्रकृति से अपनत्व रखने से व्यक्ति का व्यक्तित्व खिलता है। **2**

विभाग 2 - पद्य

उ. 2 (अ)निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) (i) **संजाल पूर्ण कीजिए।** **2**

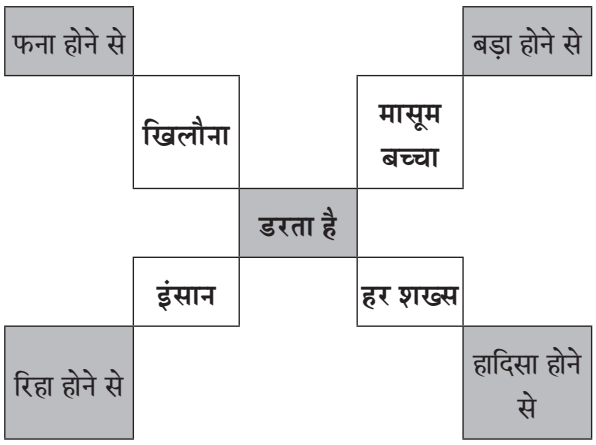

(2) (ii) **निम्न शब्दों में उचित उपसर्ग का प्रयोग कीजिए।** **1**

(I) बेमौत (II) हरपल

(3) बचपन की दुनिया में मासूमियत होती है और बड़ों की दुनिया मुश्किलों और परेशानियों से भरी होती है। बचपन जीवन की एक ऐसी अवस्था होती है; जहाँ पर जीवन का मस्ती से आनंद लिया जाता है और बड़ों की दुनिया जिम्मेदारियों से भरी होती है। कई लोगों को इस कारण जिंदगी कैद के समान लगती है। लेकिन बच्चों के लिए जिंदगी खुशियाँ एवं प्यार लेकर आती है। मुस्कुराना, शरारत करना, रूठना और फिर सब भुलाकर एक हो जाना; ये बच्चों की पहचान होती है। वहीं बड़ों के जीवन में ईर्ष्या, द्वेष एवं कलह होता है। बच्चे दुनियादारी के झमेलों से दूर होते हैं, तो बड़ों की दुनिया कई प्रकार के झमेले में उलझती रहती है। **2**

उ. 2 (आ)निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) **संजाल पूर्ण कीजिए।** **2**

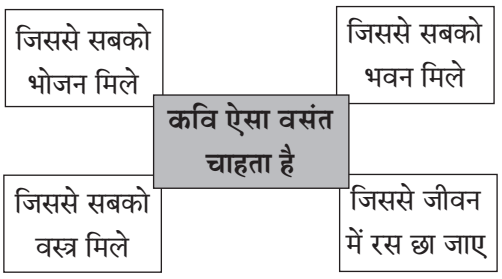

(2) (i) **निम्नलिखित तत्सम शब्द का तद्भव रूप लिखिए।** **½**

(I) वसन - वस्त्र

	(ii) **निम्नलिखित शब्द में उचित उपसर्ग लगाइए।** (I) रस - नी + रस = नीरस	½
(3)	मानव जीवन अनमोल है। मनुष्य को एक साधारण जीवन जीने के लिए रोटी, कपड़ा व मकान की आवश्यकता होती है। इनमें से किसी एक का भी अभाव होने से उसका जीवन संतुलन सुचारू रूप से नहीं चल सकता। आज हमारे देश की आबादी बढ़ रही है। बढ़ती आबादी को प्राथमिक सुविधाएँ उपलब्ध कराने में सरकार निष्फल हो रही है। आज हमारे देश में कई लोगों को तन ढँकने के लिए कपड़े भी नहीं मिल पाते हैं। कई लोग बेघर हैं और वे रेल्वे स्टेशन या सड़क पर ही अपना बसेरा बना रहे हैं। कई बच्चे-बड़े भूखे मर रहे हैं। भुखमरी की समस्या से आए दिन लोगों की मृत्यु हो रही है। सरकार अपनी ओर से प्रयास कर रही है परंतु जनता का भी कर्तव्य है कि वे अभावग्रस्त की सहायता के लिए आगे आए। मनुष्य ने इस धरती पर जन्म लिया है, तो उसे रोटी, कपड़ा व मकान जैसी प्राथमिक सुविधाएँ मिलनी ही चाहिए और लोगों को उसे प्राप्त करने के लिए मेहनत भी करनी चाहिए। यदि ऐसा नहीं हो सका, तो इन सुविधाओं के बिना मानव जीवन नीरस व व्यर्थ साबित होगा।	2
	विभाग 3 - व्याकरण विभाग	
उ. 3	**सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**	
(1)	**निम्नलिखित शब्दों का मानकवर्तनी के अनुसार शुद्ध शब्द छाँटकर कीजिए ।** (i) चिह्न (ii) कुरीति	1
(2)	**निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** (i) **धारे-धीरे** : गाड़ी धीरे-धीरे जा रही थी।	1
(3)	(i) **सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए।** एक-दूसरे से जुदा होकर पूरे डिब्बे के चक्कर काटने लगते हैं।	1
	(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के काल पहचानकर लिखिए।** अपूर्ण भूतकाल	1
(4)	(i) **निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर सार्थक वाक्यों में प्रयोग कीजिए।** **यादों में जाग उठना** : पुरानी यादें ताजा हो जाना। **वाक्य** : डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम स्वर्ग सिधारे हैं; परंतु वे आज भी हमारी **यादों में जाग उठते हैं।**	1
	(ii) **निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर सार्थक वाक्यों में प्रयोग कीा दए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए।** अचानक पिता जी द्वारा पर्यटन पर जाने का निर्णय सुनकर बच्चे **फूले न समाए।**	1
(5)	(i) **निम्नलिखित संधि विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए।** अन् + आसक्त - अनासक्त = स्वर संधि	1
	(ii) **निम्नलिखित शब्दों का विच्छेद कीजिए और भेद संधि लिखिए।** नमस्ते - नमः + ते = विसर्ग संधि	1
(6)	(i) **रचना की दृष्टि से वाक्य के प्रकार बताइए।** मिश्र वाक्य	1
	(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ के अनुसार भेद लिखिए।** निषेधार्थक वाक्य	1

विभाग 4 - रचना विभाग

उ. 4 (अ) **4**

(i)

१० जुलाई, २०१८

प्रति,

मा. महानगर अधिकारी,

महानगरपालिका,

दादर (पूर्व),

मुंबई - ४०० ०४३.

विषय : बच्चों के खेलने के लिए बगीचा बनवाने हेतु प्रार्थना पत्र।

माननीय महोदय,

मैं कुमार अजय मेहता दादर पूर्व विभाग का निवासी हूँ। मैं आपको यह प्रार्थना पत्र लिख रहा हूँ क्योंकि हमारे विभाग में बच्चों के खेलने के लिए बगीचा नहीं है।

हमारे विभाग में कुल मिलाकर दो सौ से अधिक बच्चे हैं। उनके खेलने के लिए पर्याप्त जगह नहीं है। यहाँ हर इमारत के बीच में खेलने के लिए पर्याप्त जगह नहीं है। यहाँ मैदान भी नहीं है, जिस कारण बच्चों को खेलने-कूदने के लिए बहुत दिक्कत हो रही है। छुट्टियों में उनका ठीक से मनोरंजन नहीं हो पाने के कारण घर में बैठकर या तो टी. वी. देखते हैं या कंप्यूटर गेम खेलते हैं जिससे उनका शारीरिक विकास नहीं हो पा रहा है।

आपसे नम्र निवेदन है कि आप हमारे विभाग में एक बगीचा का निर्माण करें ताकि विभाग में रहने वाले बच्चों के बाहर खेलने के लिए पर्याप्त जगह हो। मुझे आशा है कि आप मेरे प्रार्थना पत्र पर जरूर विचार करेंगे।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी।

धन्यवाद!

भवदीय,

अजय मेहता,

४०१, राम महल,

राधा नगर,

मुंबई - ४०० ०२६

ई-मेल आईडी : ajay56@gmail.com

अथवा

(ii) **4**

दिनांक - २७ मई, २०१८

प्रिय मनोज

मधुर स्मृति!

बहुत-बहुत बधाई हो! मुझे अभी-अभी तुम्हारे मित्र मानव का टेलिफोन संदेश मिला। पता चला कि तुमने इस वर्ष नौंवी कक्षा में अपने विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अगले वर्ष तुम्हारी बोर्ड की परीक्षा होनी है। आशा है, उसमें भी तुम अपने माता-पिता का नाम उज्ज्वल करोगे।

मनोज! मुझे इस समाचार से बहुत प्रसन्नता हुई है। मन में इतनी खुशी हुई कि सारे जरूरी काम छोड़कर तुम्हें बधाई-पत्र लिख रहा हूँ। मेरी ओर से हार्दिक बधाई। ईश्वर करें तुम दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करों। मम्मी-पापा भी तुम्हें आशीर्वाद दे रहे हैं।

पुन: बधाई के साथ।

तुम्हारा मित्र,

सुजल

नाम : सुजल सिंह

पता : अशोक नगर,

वी. पी. रोड,

नाशिक।

ई-मेल आईडी : sujal123@gmail.com

उ. 4 (आ)

(i) **मुद्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए।** **4**

'स्वास्थ्य ही संपदा है।'

श्रीरामपुर गाँव में धनसुखलाल नाम का एक धनी व्यक्ति रहता था। वह बहुत ही कंजूस प्रवृत्ति का था। रईस होने के बावजूद भी वह स्वयं पर कभी भी पैसे खर्च नहीं करता था। वह दिन में सिर्फ एक वक्त का भोजन करता था। इतना ही नहीं वह अपने परिवार वालों पर भी धन खर्च नहीं करता था। उसकी कंजूसी के कारण उसका परिवार प्रतिदिन भूखे पेट ही सोता था।

एक दिन धनसुखलाल बीमार पड़ गया। भरपेट खाना न खाने के कारण उसका शरीर कमजोर हो गया था। उसकी शक्ति कम हो गई थी। परिवार के लोग उसे डॉक्टर के पास ले जाना चाहते थे। लेकिन डॉ क्टर के पास जाकर काफी रूपया खर्च हो जाएगा। इसलिए उसने घरेलू औषधियाँ लेना प्रारंभ कर दिया। आहिस्ता-आहिस्ता उसका शरीर अत्यधिक अस्वस्थ और कमजोर हो गया। यहाँ तक कि अब उठकर चलने की शक्ति भी उसमें शेष नहीं थी। फिर भी वह डॉक्टर के पास जाने के लिए राजी नहीं हुआ।

उसी शाम गाँव में एक महात्मा आए। उन्होंने धनसुखलाल के बारे में सुना और वे स्वयं उसे मिलने गए। महात्मा को देखकर धनसुखलाल ने सोचा कि यह महात्मा उसका इलाज कर देंगे। उसने आशा से महात्मा को प्रणाम किया। महात्मा ने उसे स्पष्ट कहा - 'मूर्ख धनसुखलाल, मैं तुम्हारा भविष्य जानता हूँ। यदि तुम अभी डॉक्टर के पास नहीं जाओगे; तो कल सुबह तक तुम्हारी मृत्यु निश्चित है।' महात्मा की भविष्यवाणी सुनकर धनसुखलाल के हाथ-पाँव काँपने लगे और महात्मा को प्रणाम करके वह तुरंत अपने परिवार वालों के साथ डॉक्टर के पास चला गया। डॉक्टर ने पूरी निष्ठा से उसका इलाज किया। कुछ दिनों के बाद वह ठीक हो गया। अब उसकी समझ में आ गया था कि 'स्वास्थ्य ही संपदा होती है।'

सीख : स्वास्थ्य से बढ़कर दूसरी कोई संपत्ति नहीं होती। व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य का सदैव ध्यान रखना चाहिए।

अथवा

(ii) (I) अशांति का मूल कारण क्या है ?

(II) भय के वशीभूत मानव की स्थिति कैसी है ?

(III) मानव आणविक और आत्मिक दोनों शक्तियों का मिलन कैसे कराएगा ?

(IV) शांतिमय दुनिया कैसे प्रत्यक्ष होगी ?

उ. 5. (अ) विज्ञापन लेखन : **4**

खुश खबर! **खुश खबर!** **खुश खबर!**

क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक : २२ जुलाई, २०१८ से २४ जुलाई, २०१८

समय : सुबह ठीक ९:०० से ४:०० तक

स्थल : पराग विद्यालय क्रीड़ागण

खेल प्रतियोगिता

फुटबॉल	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
क्रिकेट	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
हॉकी	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
बैडमिंटन	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
खो-खो	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
टेबल टेनिस	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
कैरम बोर्ड	: सीनियर व जूनियर ग्रुप

सीनियर ग्रुप : उम्र : १४ से १६ तक

जूनियर ग्रुप : उम्र : ११ से १३ तक

संपर्क :
क्रीड़ा अध्यापक
(महेश गावडे)
पराग विद्यालय

उ. 5 (i) **(आ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर ६० से ८० शब्द में निबंध लिखिए ।** **6**

यदि मैं शिक्षा मंत्री होता.....

जीवन में शिक्षा का अत्यधिक महत्त्व है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक व आर्थिक विकास होता है। शिक्षा मंत्रालय द्वारा देश के पाठ्यक्रम एवं शिक्षा प्रणाली पर ध्यान रखा जाता है। शिक्षा मंत्री शिक्षा मंत्रालय के प्रमुख होते हैं। देश में शिक्षा प्रणाली सुचारू रूप से कार्यान्वित हो रही है या नहीं, इस पर ध्यान एवं नियंत्रण रखने का कार्य शिक्षा मंत्री करते हैं। सचमुच शिक्षा मंत्री एक बहुत बड़ा महत्त्वपूर्ण पद है।

मैं भी भविष्य में बड़ा होकर देश का शिक्षा मंत्री बनना चाहता हूँ। जब मैं शिक्षा मंत्री बनूँगा; तब मैं संपूर्ण देश में शिक्षा का कार्य सुचारू रूप से हो रहा है या नहीं इस पर ध्यान रखूँगा। देश की संपूर्ण शिक्षा प्रणाली में एकरूपता लाने हेतु में सभी शिक्षा मंडलों का एकीकरण करूँगा; जिससे देश में एक ही प्रकार की शिक्षा प्रणाली सभी के लिए उपलब्ध हो सके।

आज कई स्कूल एवं महाविद्यालयों की हालत बहुत ही दयनीय है। कई स्कूलों में संसाधनों की कमी है। कई स्कूलों में छात्रों को बैठने के लिए कुर्सियाँ तथा पर्याप्त शैक्षणिक साधन भी नहीं है। कई स्कूलों में पर्याप्त मात्रा में शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं। इन सारी समस्याओं को तुरंत सुलझाने के लिए मैं शिक्षा मंत्री होने के नाते एक समिति की स्थापना करूँगा। इससे किसी भी नगर या गाँव का छात्र शिक्षा के मूलभूत अधिकारों से वंचित नहीं रह पाएगा।

संपूर्ण देश के पाठ्यक्रम में मैं समयानुसार परिवर्तन करने हेतु विद्वान सदस्यों की एक समिति गठित करूँगा; ताकि भूमंडलीकरण एवं विज्ञान-तकनीकी के इस युग में भारतीय छात्र आगे ही आगे बढ़ सकें।

आज हमारे देश में शिक्षकों को दिया जाने वाला वेतन बहुत ही कम है। इसके लिए मैं शिक्षकों के लिए एक नए वेतनमान प्रणाली की शुरुआत करूँगा, जिससे अच्छे से अच्छे उम्मीदवार शिक्षा क्षेत्र से जुड़कर ज्ञान के प्रचार-प्रसार का पवित्र कार्य करने के लिए आगे आ सकें।

अब तो बस, यही मेरा ध्येय है। इसे साकार करने के लिए सर्वप्रथम मुझे मन लगाकर पढ़ना होगा। फिर मैं अपने विचारों को वास्तविक रूप में परिवर्तित कर सकता हूँ।

अथवा

(ii)

मेरी अभिलाषा 6

''हौसलों की उड़ान लेकर आओ, आज उड़ते हैं,

उम्मीदों के पंख लगाकर ऊँचाईयों से जुड़ते हैं''

हर व्यक्ति अपनी अभिलाषा पूर्ण करने के लिए इसी तरह हौसलों की उड़ान लेकर ऊँचाईयों को छूने का प्रयास करता है। सभी व्यक्ति समान नहीं होते; अत: उनकी अभिलाषाएँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं। मेरी अपनी अभिलाषा है कि मैं एक डॉक्टर बनूँ।

मैं केवल धन कमाने के लिए डॉक्टर नहीं बनना चाहता। मैं धन को विशेष महत्त्व नहीं देता। मैं मानव-सेवा को सबसे महत्त्वपूर्ण समझता हूँ। एक डॉक्टर की हैसियत से मैं मानव सेवा के अनेक अवसर पा सकूँगा। इसलिए मेरी उत्कट इच्छा है कि एक आदर्श डॉक्टर बनकर समाज-सेवा करूँ और अपना जीवन सार्थक बनाऊँ।

किसी भी महत्त्वाकांक्षा को साकार करने के लिए भरसक प्रयत्न करने पड़ते हैं। मैं अभी से अध्ययन में अधिक परिश्रम करने लगा हूँ। उन विषयों पर विशेष ध्यान दे रहा हूँ; जो मेरे डॉक्टर बनने में सहायक हो सकते हैं। मैं अपन गुरुजनों तथा परिचित चिकित्सकों से परामर्श करने के बाद इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि किसी भी पद्धति से रोगोपचार की क्षमता प्राप्त कर मानव-सेवा की जा सकती है। आज देश की अधिकांश जनता सही चिकित्सा से वंचित है।

वर्तमान में एलोपैथी चिकित्सा-पद्धति का बोलबाला है, फिर भी मैं आयुर्वेदिक और होमियोपैथिक चिकित्सा-पद्धति को अधिक उपयोगी समझता हूँ। यदि मैंने एलोपैथी में डिग्रियाँ प्राप्त कर लीं, तो भी मैं आयुर्वेद और होमियोपैथी का विस्तृत ज्ञान अवश्य प्राप्त करूँगा। मैं अपने मन में एलोपैथी को मुख्य नहीं, गौण मानकर चलूँगा। मैंने रोगियों पर आयुर्वेदिक और होमियोपैथिक दवाओं का चमत्कारिक प्रभाव देखा है। इसके अतिरिक्त ये दवाएँ अपेक्षाकृत सस्ती भी होती हैं और इनका रोगियों पर दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ता।

अब मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया है कि अपनी डॉक्टर बनने की अभिलाषा साकार करूँगा। मुझे विश्वास है कि अपना संकल्प पूर्ण करने में मुझे अपने माता-पिता से भरपूर सहायता और गुरुजनों से आशीर्वाद प्राप्त होता रहेगा।

❖❖❖